प्रश्न:- आधुनिक काल की परिस्थितियाँ बतायें ?

उत्तर:- शेषभाग:-

(२) स्वाधीन भारत का राजनैतिक परिवेश

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात एक दशक तक का राजनैतिक परिवेश बड़ा स्वप्निल रहा है। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में स्वाधीन भारत अनेक प्रकार के स्वप्न देखता रहा किन्तु सन् 1966 तक आते-आते स्वप्न-भंग की पीड़ा भुगतने के लिए वह मजबूर हुआ। नेहरू का व्यक्तित्व तथा कुछ सेवाभावी नेताओं के कारण नेहरू सरकार की प्रतिष्ठा बनी रही, लेकिन सन् 1962 ई० में चीन द्वारा किये गये आक्रमण के साथ ही उनकी प्रतिष्ठा की पोल खुल गयी। सद्भावि और भाईचारे की नारेबाजी से अलग होकर अपनी वास्तविक स्थिति के मूल्यांकन की आवश्यकता इसी समय से अनुभव होने लगी। लालबहादुर शास्त्री की सरकार ने इसी वास्तविकता को सामने रखकर देश को सँवारने का प्रयास किया। ताशकन्द सन्धि इन्हीं प्रयासों का फल है, जिसमें शास्त्री जी असामयिक मृत्यु के ग्रास बने। शास्त्रीजी के बाद इन्दिरा गाँधी का राजनैतिक आकाश में उदय हुआ तथा बैंकों का राष्ट्रीयकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, बांगलादेश की स्वतंत्रता आदि के कारण इन्दिरा सरकार की छवि उभरकर सामने आयी। इसी मध्य राजनैतिक व्यवस्था का केन्द्रीकरण आरम्भ हुआ। 'इन्दिरा इज इण्डिया' कहने में राजनयिकों तक को हिचक अनुभव होने लगी। प्रजातंत्र 'प्रधानमंत्री' तक सिमट गया। इसी परिणति आठवें दशक के उत्तरार्ध में 'आपातकाल' के रूप में हो गयी। आपातकाल की घोषणा स्वतंत्र भारत के इतिहास की सर्वाधिक दुःखद घटना थी। इसने सम्पूर्ण देश को एक झटके में ही गूँगा और बहरा बना दिया। साठ करोड़ लोग मानो काठ की पुतली बन गये। कुछ बुद्धिजीवी लोग 'गूँगे' बने और

अधिकांश 'चारण' बने। सन् 1977 के आम चुनाव में भारतीय जनता ने पहली बार गैर- काँग्रेसी सरकार चुनी। जो लोग आपातकाल में मौन थे, जनता पार्टी के इस शासन- काल में 'मुखर' हो गये। लेकिन जनता पार्टी द्वारा लायी गयी 'दूसरी आजादी' भी एक प्रवंचना मात्र ही सिद्ध हुई। नये नेता कुर्सी पर बैठने के लिए आकुल हो गये। जो बैठ पाये, वे इन्दिरा- प्रतिशोध में लगे और जो न बैठ पाये, वे अपने ही कुर्सी वाले साथियों के प्रतिशोध में लगे। जनता सरकार का काल नेताओं की आपसी अनबन और सत्तालिप्सा का दूषित इतिहास बन गया। कुर्सी की ऊँचाई सारे नैतिक मूल्यों से ऊँची हो गयी। परिणामत: मध्यावधि चुनाव हुए और इसमें इन्दिरा गाँधी की वापसी अनिवार्य हो गयी।

नये दशक का राजनैतिक परिवेश अनेक दु:खद घटनाओं और विवादों से भरा है। पंजाब की साम्प्रदायिकता ने इन्दिरा गाँधी की बलि तो ले ही ली, साथ में हमारे राष्ट्रीय जीवन के अंगों को भी झकझोर दिया। इन्दिरा गाँधी के बाद 'मिस्टर क्लीन' की छवि में राजीव गाँधी के नेतृत्व का उदय हुआ। उनकी आरम्भिक दिनों की फुर्ती, संयम तथा वैचारिक दृष्टि से लोग प्रभावित हुए। पंजाब, असम, श्रीलंका- संधियों के कारण उनकी सफलता के डंके बजने लगे। जनता में एक बार फिर सत्ता से कुछ आशा बँधी, किन्तु उनके ~~क~~ 'कम्प्यूटर' और 'इक्कीसवीं' सदी के मुहावरे धीरे- धीरे घिसने लगे। जनता ने दल- बदलकर देखा, लेकिन जनता दल तथा अन्य दलों का राष्ट्रीय मोर्चा भी दल- दल ही सिद्ध हुआ। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक का आरम्भ ही फिर से मध्यावधि चुनाव से हुआ। इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिवेश कृषि - प्रधान देश को कुर्सी - ~~प्रधान~~ प्रधान देश बनाता

जा रहा था। झूठे नारे एवं स्वार्थी, मूल्यहीन, अवसरवादी राजनीति ने प्रजातंत्रीय व्यवस्था को खोखला बना दिया और प्रजातंत्र मात्र एक प्रवंचना-सा लगने लगा। निरंतर मोह और मोह-भंग जनता की नियति बन गये।

(शेष बचा है)

पता:-

डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक- 06.02.2023
मो० न० - 7909046087